Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व डा रामविलास शर्मा तुलनात्मक व्यावहारिक समीक्षा आधुनिक कविता व छायावाद

डा राजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य हिन्दी विभाग,
मर्यादा देवी कन्या पीजी कालेज,
बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज।

शोधसारं

समय के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य में परिवर्तन होता रहता है तथा होते रहना भी आवश्यक है, तभी वो साहित्य समसामयिक व प्रगतिशील साहित्य बोला जाता है। रीतिकालीन दरबारी काव्यपरम्परा, मिथ्यासौन्दर्यवाद, नायिकाभेद, लक्ष्छेदारशैली, नख शिख से निकलकर कविता ने आधुनिकता के दौर में प्रवेश किया। अब कविता के रुप में परिवर्तन हुआ तथा उसके क्षेत्र में भी विस्तार हुआ। जहां वो मात्र आनंन्द की प्रतीक मानी जाती थी, विलास को उकसाने का माध्यम मानी जाती थी अब वो जीवन के आनन्द, कष्ट, समाजिक, राजनैतिक, वैचारिक धार्मिक मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों को स्पर्श करने लगी। अब उसमें जनता के आंतरिक छटपटाहट, हकों की मांग, शोषण का विरोध, वैचारिक कुंठा का विरोध तथा अन्य कई प्रकार के जनहित से सम्बन्ध होकर यहां तक कि अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए अगोचर सत्ता का भी इस्तेमाल किया जाने लगा।

कोई भी आंदोलन हो, कोई भी राजनीति हो, कोई भी कविता हो, जनसंध के , जनसमर्थन के या जनमिश्रण के बिना वो पूर्ण नहीं हो सकता। यही कसौटी शुक्ल जी व शर्मा जी की थी। यही वजह है कि शुक्ल जी के दृष्टिकोण में छायावाद उतार चढ़ाव भरा रहा है। उन्होने छायावाद में कुछ ऐसे तत्व देखे जो निहायत जनसामान्य की वैचारिक पृष्टभूमि से भिन्न थे। इसमें अदृश्यता, अनामसत्ता आदि का वर्णन रहस्वाद के रुप में प्रस्तुत करने का चलन सा हो गया था। अतिलाक्षणिकता, अगोचरता, परोक्षप्रेम, परोक्षचिन्तन, अटपटी दुरुहशैली, निराशावाद, पतनशील साधनों के प्रयोग, इतिवृत्तामकता की वजह से छायावादी काव्य को शुक्ल जी ने आलोचना की दृष्टि से अव्यस्थित रुप में देखा, जनसामान्य से काफी दूर देखा, परन्तु जहां वास्तविकाता के धरातल को देखा, प्रत्यक्षवादिता का समर्थन देखा, प्रकृति के मनोरम स्थलों को देखा, उसकी प्रशंसा भी की। निराला, पंत, तथा कहीं कहीं प्रसाद जैसे छायावादियों की अच्छी रचनाओं के लिए प्रशंसा भी की। शुक्ल जी किसी भी रचना में संकल्प की दृढ़ता पर बल देते थे न कि उसकी ढुलमुलेपन पर । अपनी बात सशक्त ढंग से पूर्णतया सामान्य जन से सम्बन्धित होकर चलने वाली बातो के वे समर्थक है। छायावाद में रहस्यवाद, निराशावाद, कुंठा तथा अतिलाक्षणिकता प्रमुखतया प्रदर्शित होती थी। डाॅ रामविलास शर्म जी भी कहते हैं शुक्ल जी ने छायावाद का विरोध किया क्योंकि उनको मानव जीवन से प्रेम था। वह साहित्य को परोक्ष चिन्तन, रहस्यवाद, अटपटी और दुरुह शैली से बचाना चाहते थे व भाग्यवाद, निराशावाद, पतनशील साधनों के विरोधी थे। आगे शर्मा जी कहते हैं कि जहां छायावादी कवियो ंने भाग्यवाद व रहस्यवाद से आगे बढ़कर के उससे बचकर के यथार्थ जीवन का चित्रण किया है वहां उन्होने उनकी प्रशंसा की है। अर्थात शर्मा जी का मानना है कि शुक्ल जी को जहां छायावाद से विरोध था उसकी ऐसी सत्ता का वर्णन करने का जिसका जगत में प्रत्यक्षतः कोई अस्तित्व नही है। अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद के बारे में शुक्ल ही कहते है- ” छायावाद नाम चल पड़ने का परिणाम यह हुआ कि बहुत से कवि रहस्यात्मकता, अभिव्यंजना के लाक्षणिक वैचित्र्य व वस्तुविन्यास की

विश्रृखंलता चित्रमयी भाषा और मधुमयी कल्पना को ही साध्य मानकर चले। शैली की इन विशेषताओं की दूरारुढ़ साधना में लीन हो जाने के कारण अर्थभूमि के विस्तार की ओर उनकी दृष्टि नहीं रही।' 1 शुक्ल जी कहते हैं - ''असीम व अज्ञात प्रियतम के प्रति अत्यंत चित्रमयी भाषा में अनेक प्रकार के प्रेमोदगारों तक ही काव्य की गतिविधि प्रायः बंध गयी। हृत्तन्त्री के झंकार, नीरव संदेश, अभिषाप अनंत प्रतीक्षा, प्रियतम का दबे पांव आना, आंख मिचैली, मद में झूमना, विभोर होना इत्याि द के साथ-साथ शराब, प्याला, साकी आदि सूफी कवियों के पुराने सामान भी इकट्ठा किये गये। कुछ हेर-फेर के साथ वही बंधी पदावली, वेदना का वहीं प्रकांड प्रदर्शन कुछ विश्रृंखलता के साथ प्रायः सब कविताओं में मिलने लगा।' ' 2 इस प्रकार छायावादी काव्य को पुनः रीतिकालीन तो नहीं कह सकते पर छायावाद को कुछ छायावादियों ने आधुनिक रीतिकालीन लोकेत्तर काव्य बना डाला। यदि रीतिकाल नखशिख व विलासिता से ग्रसित था तो छायावाद रहस्यवाद, लाक्षणिकता, अदृश्यसत्ता के वर्णन से ग्रसित है। जब शुक्ल जी ने छायावाद की आलोचना की तब उसने वेदों पुराणों संहिताओं तक अपनी दौड़ लगाना शुरु कर दिया तथा तर्क देना प्रारम्भ कर दिया कि अव्यक्त व अज्ञेय शब्दों में ही प्रेम व्यंजना खोजने का प्रयास किया गया है। कहने लगे कि हमारे यहं ा वो बातें भी थीं। वे उपनिषदों मं े आये आत्मा के पूर्ण आनन्द स्वरुप निर्देश बं ्रहमान्द की अपरिमेयता को समझाने के लिये स्त्री-पुरुष सम्बन्ध वाले दृष्टांत या उपमाएं योग के सहस्त्रदल कमल आदि की भावना के बीच से बड़ें संतोष के साथ उद्धृत करते है। शुक्ल जी इसका खंडन करते हैं - ''यह सब करने से पहले उन्हे समझना चाहिए कि जो बात ऊपर कही गयी है उसका तात्पर्य क्या है? यह कौन कहता है मत-मतान्तरों की साधना के क्षेत्र में रहस्य मार्ग नहीं चलें? योग रहस्य मार्ग है, तंत्र रहस्य मार्ग है, रसायन भी रहस्य मार्ग है पर ये सब साधनात्मक है। प्रकृत भाव भूमि या काव्य भूमि के भीतर चले हुए मार्ग नहं ी। भारतीय परंपरा पर कोई कवि, अनाहत नाद आदि के चक्रो ं को लेकर तरह-तरह के रंगमहल बनाने में प्रवृत्त नहीं हुआ।3 शुक्ल जी कहते हैं कि संहिताओं में तो अनेक प्रकार की बातों का संग्रह है उपनिषदों मं े ब्रह्म और जगत् आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में कई मत हैं- वे काव्य ग्रंथ नहीं है अर्थात शुक्ल जी धार्मिक वाद विवाद की पुस्तकों को काव्य की श्रेणी में नहीं रखते है। उन्होने कहा ये सारे धार्मिक ग्रंथ ऐतिहासिककर्मकाण्ड, दार्शनिकचिन्तन, सं ाप्रदायिकगुह्यसाधना, मंत्र, तंत्र, जादू, टोना इत्यादि बहुत सी बातों में उलझे हुए हैं। अर्थात शुक्ल जी छायावादियों के उस रहस्यवादी तर्क - ''कनक प्रभात, विचारों में बच्चों की सांस, स्वर्ण समय, प्रथम मधुबाला, तारिकाओं की तान स्वप्निक्रांति' 4 आदि को मिथ्याडम्बर, बिना आधार व तर्क वाले तथ्य कहकर नेस्तानाबूत कर दिया तथा इन सारी प्रवृत्तियों को अतिशय लक्षणिकता कह करके काव्य में स्थान नहीं दिया तथा छायावाद को एक शैली मात्र कहा, काव्य नहीं। डा0 शर्मा इन्हीं कुछ मुद्दों पर आचार्य शुक्ल से असहमति प्रकट करते हैं। अब तो छायावाद की ये स्थिति हो गयी थी कि जीवन के व जगत् के नाना मार्मिक पक्षों की ओर इनके कवियों का ध्यान ही जाना बंद हो गया था - अभिव्यंजना प्रणाली या शैली वैचित्रता ही सब कुछ समझी गयी- ''प्रिय के कपोलों की ललाई, हाव-भाव, मधु स्राव, अश्रुप्रवाह इत्यादि के रंगीले वर्णन कर के ही अब के कवि तृप्त होने लगे अर्थात केवल इन्ही सीमाओं में बंधे रह गये।' ' 5 शुक्ल जी छायावाद के लाक्षणिकता कलावाद व अभिव्यंजना के दुष्प्रभाव को बतलाते हुए कहतें हैं- ''कलावाद व अभिव्यंजनावाद का पहला प्रभाव यह दिखाई पड़ा कि काव्य में भावानुभूति के स्थान पर कल्पना का विधान ही प्रधान समझा जाने लगा और कल्पना अधिकतर अप्रस्तुतों की योजना करके तथा लाक्षणिक मूर्तिमत्ता और विचित्रता लाने में प्रवृत्त हुई। प्रकृति के नाना रुप और व्यापार इसी प्रस्तुत योजना के काम में लाये गये।' ' 6 इस प्रकार जब ऐसा समय आ जाये जब मनुष्य को साहित्य के उस भाग को पढ़ने का समय न रहे जिसमें मानव जीवन के विविध पक्षों का वर्णन है तो साहित्य मात्र मनोरंजन का साधन बन कर रह जायेगा, सकुचित रह जायेगा। ''हृदय और वेदना का पक्ष छोड़ा नहीं गया है इससे काव्य की प्राकृतिक स्वरुप के तिरोभाव की आशंका नहीं है। पर छायावाद और कलावाद के सहसा आ धमकने से वर्तमान काव्य का बहुत सा अंश एक बंधी हुई लीक के भीतर सिमट गया नाना अर्थ भूमियों पर न जाने पाया यह अब अवश्य कहा जायेगा।' ' 7 यद्यपि शुक्ल जी छायावाद की सीमाओं का अंकन करते हैं परन्तु उसे पूर्णतया बहिष्कृत नहीं करते हैं। तभी तो लिखते है छायावाद के कुछ कवि अध्यात्मिक प्रतीकवाद से बाहर निकलकर प्रेम प्रसंग के संकीर्ण दायरे से निकलकर जीवन और जगत के अन्य मार्मिक पक्षों की ओर अग्रसर हुए। शुक्ल जी जयशंकर प्रसाद के बारे में कहते है-''अधिकतर तो विरह वेदना के नाना सजीले शब्द पथ

निकालते तथा लौकिक और अलौकिक प्रणय को मधुगान करते रहे, पर लहर में कुछ ऐतिहासिक वृत्त लेकर छायावाद की चित्रमयी शैली को विस्तृत अर्थ भूमि पर ले जाने का प्रयास भी उन्होनें किया और जगत् के वृंदावन बन जाने की आशा भी प्रकट की तथा जीवन के प्रभात को जगाया। इसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत नंे गुंजन में सौन्दर्य चयन से आगे बढ़ जीवन के नित्य स्वरुप पर भी दृष्टि डाली है। सुखःदुख दोनों में अपने हृदय का सामन्जस्य किया है और जीवन की गति में भी लय का अनुभव किया है। युगवाणी में उनकी वाणी ही बहुत कुछ वर्तमान आंदोलनों की प्रतिध्वनि के रुप में परिणत होती दिखाई देती है।' ' 8 इस प्रकार विविध कथनों से स्पष्ट होता है कि शुक्ल जी को छायावाद से कोई बैर नहीं था डाॅ0 रामविलास शर्मा भी कहते हैं कि- शुक्ल जी को जहां छायावाद में रहस्यवाद, अध्यात्मवाद, अतिलाक्षणिकता, इतिवृत्तामकता, अदृश्यता की वजह से छायावाद की आलोचना करनी पड़ी वहंीं दूसरी तरफ जहां मानव जीवन के बहुत निकट सौन्दर्य की वास्तविक भावभूमि पर उसे देखा तथा स्वाभाविक प्रकृति चित्रण, मानव सुलभ सुपाच्य संवेदनशीलता देखी वहीं उसकी प्रशंसा भी की है। शर्मा जी लिखते है- ''शुक्ल जी ने छायावाद का विरोध किया, इसके पीछे यथार्थ जीवन से उनका प्रेम था वह साहित्य को परोक्ष चिन्तन, रहस्यवाद, अटपटी और दुरुह शैली से बचाना चाहते थे। भाग्यवाद, निराशावाद, और पश्चिमी कविता के पतनशील रुझानांे से हिन्दी साहित्य की जातीय परम्परा की रक्षा करना चाहते थे।' ' 9 शर्मा जी ने मात्र इन कुछ पंक्तियों में शुक्ल जी छायावाद सम्बन्धी मत को बड़े अच्छें ढंग से प्रस्तुत कर दिया तथा शर्मा जी कहते हैं- ''जहां छायावादी कवि रहस्यवाद व निराशावाद से बचकर यथार्थ जीवन का चित्रण कर सके वहां शुक्ल ही ने बराबर उन्हें सराहा है।' ' 10 शुक्ल जी चाहते थे कि रोमांटिक कविता या स्वच्छतावाद का प्रसार हो लेकिन यह धारा स्वाभाविक हो, विषयवस्तु में रहस्यवाद और रुप में अटपटापन लिए हुए न हो, वह सच्ची रोमांटिक कविता के लिए लोकगीतों को आधार बनाना जरुरी समझते थे। इसके लिए उन्होने बर्न्स (स्काटलैण्ड के कवि) को उदाहरण के रुप में रखा जिसने जन जीवन के कितने निकट होते हुए रोमांटिक धारा का वर्णन किस प्रकार किया। इसी प्रकार 'श्रीधर पाठक' को शुक्ल जी ने स्वच्छन्दतावाद का प्रर्वतक कहा है। शर्मा जी कहते हैं- ''शुक्ल जी जिस स्वच्छन्दतावाद के पक्ष में थे, वह काफी व्यापक धारा थी। वह अपने में आंसू, उच्छवास, जैसी रचनाओं कोे भी समा लेते थे। शर्मा जी पूछते हैं शुक्ल जी विरोधी किसके थे? स्वयं उत्तर देते हैं रहस्यवाद के, अतिलाक्षणिकता के।' ' 11 यद्यपि शर्मा जी शुक्ल जी के छायावाद विरोध के मूल कारण को समझाते तो हैं परन्तु उन्होनें वास्तव में छायावाद को कहीं न कहीं सीमित अर्थों में लिया है, जिसके बारे में शर्मा जी कहते हैं- ''शुक्ल जी ने छायावाद को सीमति अर्थ में लिया है ऐसा कहना उचित नहीं है, किसी आंदोलन के बारे में उसके नेता या आलोचक क्या कहते है, उसकी विशेषता नहंी परखी जा सकती, छायावाद के नेता कुछ भी कह रहे हों उसकी जो भी व्याख्याएं की जाती रही हो महत्व की बात यह है कि छायावादी कवि लिखते क्या है उनके साहित्य की मूल्य पूंजी क्या है उन्होनें साहित्य को किस रुप में जनता के सामने रखा इत्यादि। शुक्ल जी ने इस तरह छायावाद को ऐतिहासिक विवेचन नहीं किया लेकिन जिन विशेषताओं पर उन्होनें आक्रमण किया है वे विशेषताएं कल्पित नहीं है वास्तवकि थी, मानना होगा और उनका यह आक्रमण सही था यह भी मान लेने से ही कल्याण होगा।' ' 12 यहां देखने से स्पष्ट हो जाता है कि शर्मा जी किस तरह से शुक्ल जी की कमियों का वर्णन, उनकी सीमाओं का वर्णन करते हैं पर बड़ी चालाकी से पुनः अपनी बात कहकर उनका समर्थन भी करने लगते हैं। कहीं न कहीं ये तो कहा ही जा सकता है कि विचारधाराओं में कुछ विरोध होने के बावजूद शर्मा जी का शुक्ल जी के प्रति मोह अधिक था। शर्मा जी कहते हैं- ''शुक्ल जी ने नई कविता के लिए जो सबसे घातक विचारधारा समझी है वह है रहस्यवाद। रहस्यवाद से काव्य की विषयवस्तु संकुचित हुई है।' ' 13 शुक्ल जी कह चुके है- असीम व अज्ञात प्रियतमक के प्रति अत्यंत चित्रमयी भाषा में अनेक प्रकार के प्रेमोद्गारों तक ही काव्य की गतिविधि प्रायः बंध गयी। 'रहस्यवाद' नामक निबन्ध में स्वयं शुक्ल जी कहते हैं- मैं रहस्यवाद का विरोधी नहीं हूँ। लेकिन शर्मा जी के अनुसार शुक्ल जी ने ऐसा निबन्ध तीखेपन को कम करने के लिए ही लिखा है। अपने निबन्ध में रहस्यवाद को, रहस्य की भावना को, रमणीय व मधुर कह डालते हैं, पर उसे काव्य का सिद्धान्त नहीं मानते। जहां वाद की बात उठती है वहां उसे वो सम्प्रदायवाद कहने लगते हैं। वह रहस्यवाद से हटकर प्राकृत भाव पर आने की बात करते है।

शर्मा जी रहस्यवाद, अतिलाक्षणिकता, अदृश्य सत्ता आदि जैसे छायावादियों के काव्य के मूल, जिसकी शुक्ल जी ने आलोचना की, से सहमत होते हुए भी पूर्ण सहमत नहीं है। जैसे रहस्यवाद को ही ले लिया जाय इसको शुक्ल जी अभारतीय कहते हैं जो शर्मा जी को स्वीकार नहीं था- ''किसी भी विचारधारा का विरोध करने के लिए उसे अभारतीय कहना यहां के तर्कशास्त्रीयों का खास दांव है। यह दांव शुक्ल जी ने भी लगाया है। जायसी के परोक्ष प्रेम को उन्होने अभारतीय कहा, सूर व मीरा तक को अभारतीय कहा है, नये रहस्यवादियों का विरोध करने के लिए उन्होने अभारतियता की दुहाई दी है।'' 14 इसी प्रकार शुक्ल जी रहस्यवाद की विषयवस्तु के अलावा निराशावाद, अबुद्धिवाद, भाग्यवाद आदि का खण्डन करते हैं पर शर्मा जी यहां भी उनसे थोड़ा सा इतर विचार रखते है तथा कहते हैं- ''बहुत ज्यादा रोने धोने का सम्बन्ध अगोचर ब्रह्म की अनुभूति से नहीं है उसके ठोस समाजिक कारण है।'' 15 अर्थात शर्मा जी का मन्तव्य यह है कि छायावाद में जो कोई निराशावाद आदि आये हंै वो व्यर्थ में या निरर्थक नहीं हैं उनके कोई न कोई सामाजिक कारण अवश्य है। मनुष्य के जीवन में सारा समय सुखमय ही नही होता उसमें दुःख व निराशा के भी क्षण आते है उसी क्षण का अनुभव छायावादी- रहस्यवाद, निराशावाद में आया है। ऐसे ही शुक्ल जी कबीर के साथ न्याय नही कर पाये थे शुक्ल जी छायावाद को जो शैली मात्र मानते है शर्मा जी उससे सहमत नही है उनका मानना है कि ऐसा कहने से छायावाद को सीमित कर देना होगा- '' छायावाद हिन्दी साहित्य की रोमांटिक धारा है वह मूलतः रीतिकालीन परम्परा की विरोधी है.....यद्यपि रहस्वाद छायावाद का कमजोर पक्ष है पर छायावादियों पर वाद विशेष से बंध जाने का दोष लागाते हुए वह स्वयं (शुक्ल जी) छायावाद को संकुचित रहस्यवाद के अर्थ में लेते रहे। यही कारण है कि गैर-रहस्यवादी रचनाएं जब भी छायावाद में आयीं तो शुक्ल जी ने उसे छायावाद के बाहर की चीज समझा। ''16 यहां डा0 शर्मा समन्वयवादी व व्यापकतावादी विचारधारा के पोषक के रूप में सामनें आते है। यद्यपि वो रहस्यवाद को छायावाद का कमजोर पक्ष मानते है परन्तु यह भी मानते है कि छायावाद में मात्र रहस्यवाद ही नही है या सभी प्रकार के रहस्यवाद छायावाद में निरर्थक नही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद में जो- रहस्यवाद, अतिलाक्षणिकता, अगोचरता, भाववाद, निराशावाद, अबौद्धिकता, भाग्यवाद को लेकर उसे मात्र एक शैली मान बैठे है तथा उसकी जमकर अलोचना करते है डा0 शर्मा के अनुसार ऐसा करके शुक्ला जी कुछ जल्दबाजी कर गये। उसकी गहराई, उसकी तह तक नही पहुंच सकें शुक्ल जी मात्र उनके कहने के ढंग पर चले गये तरीको को देखकर चिढ़ गये। ये वो यह नहीं देंख सके कि भले रहस्यवाद था भले लाक्षणिकता थी, भले निराशा थी, उसके पीछे कारण क्या था जिसके कारण छायावादियों ने ये सब रखा। जैसे शुक्ल जी रहस्यवाद को लेकर चिढ़े तो भारत व विश्व के हर रहस्यवादी पर एक साथ हल्ला बोल दिया। जबकि वहीं शुक्ल जी नये रहस्यवादियों को पछाड़ने के लिए जायसी व कबीर के परोक्ष प्रेम को सराहने लगते हैं भारतियता कि दाद देने लगते है पर डा0 शर्मा कहते कि जब वही रहस्यवाद जिसकी शुक्ल जी ने मध्यकाल में प्रशंसा की आधुनिकालीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर आया तो उसका विरोध क्यों किया। यद्यपि कई बातों को लेकर शुक्ल जी ने भले ही छायावाद का विरोध किया परन्तु उसमें कहीं न कहीं जीवन, जगत्, प्रकृति, मनोभाव, संवेदना के दर्शन किये इसीलिए तो निराला, पंत, प्रसाद की कई रचनाओं की प्रशंसा भी करते है। अंत में शर्मा जी कहते हैं- ''शुक्ल जी ने रहस्यवाद का खण्डन किया, कविता से निराशावाद, भाग्यवाद, अतिलाक्षणिकता की शैली को दूर करने का आग्रह किया। यद्यपि छायावाद की व्याख्या ऐतिहासिक दृष्टि से सही नहीं है फिर भी शुक्ल जी ने छायावादी कवियों की लोकजीवन सम्बंधी कविताओं का समर्थन किया साहित्य में अगोचर के बदले गोचर जगत पर बल दिया छायावादी कविता को लोकगीतों की परम्परा जोड़ते हुए सच्ची रोमांटिक भावभूमि पर आगे बढ़ने का सुझाव दिया उनका यह विवेचन आलोचना के लिए ही नही हिन्दी कविता के प्रगति के लिए बहुत उपयोगी है।17

सन्दर्भ गंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन (रामचन्द्र शुक्ल), पृ0 385
2. वही, पृ0-385

3. वही, पृ0-385
4. वही, पृ0-386
5. वही, पृ0-386
6. वही, पृ0-386
7. वही, पृ0-387
8. वही, पृ0-387
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना (डाॅ रामविलास शर्मा) पृ0-159
10. वही, पृ0-159
11. वही, पृ0-161
12. वही, पृ0-161
13. वही, पृ0-161-162
14. वही, पृ0-163
15. वही, पृ0-164
16. वही, पृ0-165-166
17. वही, पृ0-20